Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2023, VOL- 10/75
10.21922/srjis.v10i75.123022

तुलसीदास की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना : एक समाजशास्त्रीय पाठ

धीरज प्रताप मित्र

शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

Paper Received On: 25 FEBRUARY 2023
Peer Reviewed On: 28 FEBRUARY 2023
Published On: 01 MARCH 2023

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रस्तावना

भारतीय इतिहास के मध्यकाल में जब यहाँ सामाजिक, सांस्कृतिक, मानसिक एवं वैचारिक स्तर पर ना केवल जड़ता की स्थिति थी बल्कि सांस्कृतिक टकराव युक्त संक्रमणकाल भी चल रहा था। जब देश के करोड़ों दलित, पीड़ित, वंचित एवं शोषित सामाजिक व्यवस्था की भयानक बेड़ियों में बंधे कराह रहे थे तब भक्ति आन्दोलन के रूप में एक जन आन्दोलन खड़ा हुआ जिसने ना केवल इस तबके के लोगों में आत्मसम्मानयुक्त जीवन जीने हेतु प्रेरित एवं निर्देशित किया बल्कि तत्कालीन ऊंच- नीच, कृत्रिम भेदभाव, पाखण्ड एवं समाज में प्रचलित अमानवीय रूढ़ियों का भी विरोध कर वर्ग, जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के भेद से इतर सभी मानवों के लिए ईश्वर की सामान भक्ति एवं तदनुसार मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया. यह एक नई समाज व्यवस्था के विकसित होने का दौर था जिसका नेतृत्व कबीर, रैदास, मीरा, सूरदास, एवं तुलसीदास जैसे संत एवं भक्त कवियों ने किया।

इन संतों एवं कवियों में तुलसीदास जी का स्थान विशिष्ट रहा है। प्रभु राम की भक्ति के अवलंबन में इन्होने ना केवल विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों एवं पंथों की एकता का सूत्र बांधा बल्कि भारतीय समाज व्यवस्था में व्याप्त कलह एवं बिखराव को भी शास्त्र सम्मत ढंग से व्यवस्थित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने श्रेष्ट नैतिक मूल्यों की स्थापना हेतु अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रयत्न किया एवं ना केवल भक्त संतों एवं कवियों के बीच अपना स्थान बनाया बल्कि भारतीय जनमानस के भी मानस पटल पर

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हमेशा के लिए अंकित हो गए। प्रस्तुत लेख तुलसीदास जी की सामाजिक एवं धार्मिक अंतर्दृष्टि को समझने एवं समेटने का प्रयास है.

मुख्य शब्द : वर्ण,धर्म, राज्य, कर्म, जाति, समाज,परंपरा,पाखण्ड, ब्रह्म, जीवन दर्शन

जीवन परिचय

मध्यकाल के अनेक संतों एवं कवियों के भांति ही तुलसीदास जी के भी जीवन सम्बन्धी तथ्यों यथा जन्मतिथि- स्थान आदि के बारे में पर्याप्त स्पष्टता का अभाव है। भिन्न-भिन्न मतों, जनश्रुतियों एवं समकालीन साहित्य में मिलने वाले प्रमाणों आदि से साम्य बैठाने पर सन् 1532 ई. को तुलसीदास जी के जन्म वर्ष के रूप में विद्वानों के बीच सहमति प्राप्त होती है तथापि निश्चित तिथि एवं माह के विषय में अस्पष्टता वर्तमान ही है। इनके जन्मस्थान के विषय में भी विवाद की स्थिति रही है तथापि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने राजापुर को तुलसीदास जी के जन्मस्थान के रूप में माना है. तुलसीदास जी ने जीवन पर्यंत भ्रमण ही किया और इस सबके बीच अपनी काव्य रचना आदि का महत्वपूर्ण काल काशी में व्यतीत किया। उनकी मृत्यु सम्बन्धी विवरण के तौर पर एक दोहा अत्यंत प्रचलित है कि-

संवत सोरह सै असी, असी गंग के तीर ।
श्रावण शुक्ला सप्तमी, तुलसी तज्यो शरीर।।

तुलसीदास जी के जन्म वर्ष को १५३२ एवं मृत्यु वर्ष को १६२३ स्वीकारने पर उनकी आयु ९१ वर्ष आती है जिसका कि लोक जन में विश्वास है कि वो अत्यंत ही विषम जीवन परिस्थितियों के बीच भी अपनी साहित्यिक साधना करते हुए दीर्घायु रहे थे। इनके परिवार के विषय में लोक जन में प्रचलित मान्यता है कि ये सरयूपार के ब्राह्मण परिवार से सम्बंधित थे। इनके पिता जी का नाम आत्माराम एवं माता जी का नाम हुलसी था. इनके बारे में यह प्रचलित है की बाबा नरहरिदास जी ने भगवान् शिव की प्रेरणा से इनका नाम मुंहबोला रखा था. इनकी पत्नी जिसके प्रति ये अत्यधिक आसक्त थे एवं जिसकी

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

प्रताड़ना ने इन्हें गृहस्थ जीवन से विरक्त कर दिया उसका नाम रत्नावली था। इनका जीवन अत्यंत ही संघर्षपूर्ण स्थितियों से युक्त रहा जिसके बारे तत्कालीन अन्य व्यक्तियों की साहित्यिक रचनाओं के साथ इनकी स्वयं की रचनाओं में यथास्थान विवरण दोहों आदि के माध्यम से प्राप्त होता है। जैसे कि कवितावली में इनके द्वारा अपने जन्म की स्थितियों के बारे में दोहा लिखित है कि-

मातृ-पिता जग जाइ तज्यो विधिहूँ न लिखी कुछ भाल भवाई।
नीच निरादरभाजन, कावर, कूकर-टूकन लागि ललाई।।

तुलसीदास जी के बारे में प्रचलित है कि उनका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ था और ज्योतिषीय मान्यता है कि मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला बच्चा माता-पिता के अथाह दुःख का कारण बनता है अथवा उनकी मृत्यु का भी करक हो सकता है। पंडितो की इस प्रकार की भविष्यवाणी के पश्चात उनके माता पिता ने इन्हें त्याग दिया जिसके बारे में कवितावली में ये अपने पदों में लिखते हैं कि माता-पिता द्वारा त्यक्त वो निरादर के पात्र ही बनें एवं कुत्ते के जूठन को भी तरसते रहे। घूमते बिलबिलाते जब कभी चने के चार दाने इन्हें प्राप्त होते तब ये इस प्रकार खुश होते कि जैसे कि इन्हें चारों पुरुषार्थों यथा धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति हो गयी है।

बारे ते ललात बिललात द्वार द्वार दीन,
जानत हौं चारि फल चारि ही चनक को॥
तुलसी सो साहिब समर्थ को सुसेवक है,
सुनत सिहात सोच बिधि हू गलक को॥
नाम, राम! रावरो सयानो किधौं बाबरो,
जो करत गिरी तें गरु तृन तें तनक को॥

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

जीवन संघर्षों के दौरान ही लोकजन एवं संतजनों के बीच तुलसीदास जी की प्रतिष्ठा उनके जीवन काल में ही स्थापित हो गई थी एवं उनका निवास स्थान काशीक्षेत्र ही स्थायी रूप से बन चुका था। मान्यता है कि काशीक्षेत्र में फैली महामारी के चपेट में वो आ गए थे जिसकी वजह से उन्हें अनेक शारीरिक बीमारियों ने घेर लिया था। जनश्रुति है कि उसी के उपचार के रूप में तुलसीदास जी ने हनुमान जी की आराधना की एवं हनुमान बाहुक की रचना किए जिसमे उनके कष्टों का विवरण मिलता है। कुछ विद्वान मानते हैं कि हनुमान जी की आराधना करने से उन्हें शारीरिक कष्टों से मुक्ति मिली जबकि कुछ का मानना है कि वो ठीक नहीं हो पाए और उसी शारीरिक कष्ट में उनकी मृत्यु हुई।

हनुमान बाहुक के ३७ वें पद में उन्होंने लिखा है कि-

पाँय पीर पेट पीर बाँह पीर मुँह पीर, जरजर सकल पीर मई है ।
देव भूत पितर करम खल काल ग्रह, मोहि पर दवरि दमानक सी दई है ।।
हौं तो बिनु मोल के बिकानो बलि बारेही तें, ओट राम नाम की ललाट लिखि लई है ।
कुँभज के किंकर बिकल बूढे गोखुरनि, हाय राम राय ऐसी हाल कहूँ भई है ।।

तुलसीदास का धार्मिक दृष्टिकोण-

तुलसीदास जी अपने आराध्य भगवान् राम को रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड के ४ दोहे में परमवस्तु, परमार्थस्वरूप कहते हैं जिसके बारे में वेदों में नेति- नेति कहा गया है-

राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा॥

साथ ही वो लंकाकांड में उन्हें दीनबंधु दयाल के रूप में संबोधित करते हुए देवताओं पर भी दया करने वाला कहा है-

दीन बंधु दयाल रघुराया। देव कीन्हि देवन्ह पर दाया॥

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

तुलसीदास भगवान् राम को उनके करुना सुख सागर होने एवं शबरी जैसे भक्तों की शरणागत होने पर सबके तारनहार होने के मानवीय गुणों की प्रशंसा करते हुए सभी शरणागतों के तारनहार कहते हुए उनको अपना आराध्य मानते हैं। राम सभी शरणागतों पर अपनी करुणा दृष्टि करते हैं उनके इस सर्वोच्च मानवीय गुण के कारण ही देवता- मनुष्य आदि सभी उनकी आराधना करते है।

तुलसीदास जी ने अपने आराध्य राम को तो तारनहार के रूप में संबोधित करते ही है साथ ही उनके अवतार स्वरूप से इतर जिसमें कि वो काल विशेष में जनकल्याण को अवतरित हुए थे वो विनयपत्रिका में उनके नाम को मणिदीप एवं कल्पतरु कहा है और इस प्रकार भगवान् के नाम को भगवान् के प्रेम को प्राप्त करने में सहयोगी एवं काल विशेष से मुक्त तारणहार के रूप में कहा है। राम नाम के जप से ही मुक्ति हो जाएगी प्रभु से साक्षात् मिलने की आवश्यकता ही नहीं । इस प्रकार मूर्त भगवान् के ऊपर तुलसीदास जी उनके नाम की महत्ता स्थापित करते हैं-

मति रामनाम ही सों, रति रामनाम ही सों गति रामनाम ही की विपति हरनि॥
रामनाम सों प्रतीति प्रीति राखे कबहुँक तुलसी ढरेंगे राम आपनि ढरनि॥

जाना चहहिं गूढ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ॥

राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्हि बिबाकी॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रबि निसि नासा॥
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू॥

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

मध्यकाल के सभी सगुन-निर्गुण भक्त कवियों एवं संतों ने बाहरी कर्मकांड एवं आडम्बर के स्थान पर मन की शुद्धता एवं ईश्वर के प्रति प्रेम को महत्वपूर्ण माना। तुलसीदास अपने आराध्य प्रभु राम के प्रति अपने प्रेम को दर्शाते हुए लिखते हैं कि-

प्रीति राम सों नीति पथ चलिये राग रिस जीति ।

तुलसी संतन के मते इहै भगति की रीति ।।(दोहावली पृष्ठ ३८)

तुलसीदास जी कहते हैं कि राग-मोह एवं क्रोध से परे नीति नियम पर चलना एवं ईश्वर के करुनामय स्वरूप का स्मरण करना ही भक्ति है। ईश्वर प्रेम की अनन्यता के लिए तुलसीदास जी मछली के जल से एवं चातक पक्षी के स्वाती नक्षत्र के वर्षा के जल से सम्बंधित करते हुए स्वयं को अपने आराध्य से जोड़ते हुए कहते हैं कि हे प्रभु मुझे आप जल की मछली के सामान बनाईये जो राम नाम के जल के बिना दुबला एवं राम नाम से ही पुष्ट हो-

राम प्रेम बिनु दूबरो, राम प्रेमहीं पीन

रघुबर कबहुँक करहुगे तुलसिहि ज्यों जल मीन।।(दोहावली पृष्ठ २९)

तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में अनेक स्थानों पर विभिन्न प्रसंगों के अंतर्गत पिता-पुत्र, माता-पुत्र, भाई-भाई, राम का केवट, जटायु आदि के प्रति संबंधों में स्थित प्रेम का बहुत ही मार्मिक ढंग से चित्रण किया है। विषम से विषम परिस्थितियों में भी कैसे अनन्य प्रेम बरकरार रहता है जो जीवन को मधुरता से भर देता है इसको तुलसीदास ने अपने पदों के माध्यम से ना केवल लोकजन के समक्ष रखा बल्कि अपने जीवन में उसे उतारा भी और राम को सबकुछ समर्पित कर एक प्रेममय जीवन उनकी भक्ति में जिए। अपनी रचनाओं के माध्यम से तुलसीदास जी गुरु के प्रेम, ज्ञान का महत्व एवं नवधा भक्ति को महत्व प्रदान करते हैं। विनय पत्रिका में वे अपने आराध्य राम से पुत्र के सामान हठ करते हुए अपनी भक्ति उन्हें समर्पित किए हैं। अपने पदों के विशिष्ट रूप के कारण वे सिर्फ तुलसीदास की उनके आराध्य के प्रति भक्ति ना होकर जनसामान्य का लोकमंगल की दृष्टि से किया

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

गया प्रभु से निवेदन प्रतीत होने लगता है। इससे तुलसीदास जी की ना केवल लोक दृष्टि का ज्ञान हमें मिलता है बल्कि उनकी साहित्य की विभिन्न विधाओं में पारंगतता का भी पता चलता है।

तुलसीदास का सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण

तुलसीदास जी के जीवनकाल के दौरान भारत पर मुग़ल शासन स्थापित हो चुका था। मुग़ल चूंकि विदेशी धरती से यहाँ आए थे तथा अपने साथ भिन्न संस्कृति भी लाए जिससे यहाँ पर सामाजिक- सांस्कृतिक टकराव एवं संक्रमण की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। पुरातन वर्णाश्रम व्यवस्था जो भारतीय समाज को विशिष्ट सूत्र में बांधने के साथ सबकी एक दुसरे पर अन्योन्याश्रिता को भी जगह देती थी अब अपनी अंतिम साँसे गिन रही थी। मुश्किल यह थी कि ना तो पुरानी समाज व्यवस्था पूर्णतः समाप्त हुई और ना ही नई स्थापित हो सकी। इस प्रकार तत्कालीन समय में समाज व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गयी थी जनता के प्रति उत्तरदायित्वों का अब कोई मोल नहीं था सब तरफ दरबारी संस्कृति घर की हुई थी जो सिर्फ राज दरबारों तक सीमित नहीं थी बल्कि छोटे मोटे सामंत भी वही जीवनशैली अपनाने की कोशिस में रहते थे। इस प्रकार की व्यवस्था का दुष्परिणाम हुआ कि भोगविलास की संस्कृति की वजह से शासक वर्ग का चारित्रिक पतन तो हुआ ही साथ ही साथ ही सामंती वर्ग का भी नैतिक पतन हो गया जिसका सीधा असर सामान्य जनमानस पर पड़ा। लोगों के बीच कलह, संपत्ति की लूट-खसोट एवं युद्ध आदि सामान्य हो गए। अंधविश्वास से भरे समाज में जहा ढोंगी पाखंडी जनता का शोषण कर रहें थे वहीं प्राकृतिक आपदाएं भी उनकी भरपूर परीक्षा ले रही थी। चारो तरफ फैले अव्यवस्था एवं पतन के दौर में निर्गुण संतों एवं कवियों ने धार्मिक पाखंड एवं कर्मकांड से आम जनमानस को बाहर लाने हेतु भक्ति आन्दोलन के माध्यम से नई चेतना का प्रचार प्रसार किया। इसने ना केवल अंधविश्वास को कम किया बल्कि सांप्रदायिक सौहार्द्र को भी बढाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। निर्गुण संतों- कवियों के साथ सगुन उपासकों ने भी आस्थाहीन जीवन से

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आमजनमानस को प्रेमाभक्ति का अमृतपान कराया। तुलसीदास जी ने तत्कालीन सामाजिक जीवन को अपने पदों के माध्यम से कवितावली आदि ग्रंथों में वर्णित किया है यथा-

किसबी, किसान कुल, बनिक, भिखारी, भाँट,

चाकर, चपल, नट, चोर, चार, चेटकी।

पेट को पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,

अटत गहन-गन अहन अखेट की॥

ऊँचे नीचे करम धरम अधरम करि,

पेट ही को पचत बेंचत बेटा बेटकी।

तुलसी बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,

आगि बड़बागि तें बड़ी है आगि पेट की॥

अन्यत्र तुलसीदास दरिद्रता की स्थिति को निरूपित करते हुए लिखते हैं कि-

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख,

बलि, बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।

जीविका-विहीन लोग सीद्यमान* सोच बस,

कहैं एक एकन सों "कहाँ जाई, का करी"?॥

बेद हूँ पुरान कही, लोकहू बिलाकियत,

साँकरे सबै पै राम रावरे कृपा करी।

मेरें जाति-पाँति न चहौं काहू की जाति-पाँति,

मेरे कोऊ काम को न हौं काहू के काम को।

लोकु परलोकु रघुनाथ ही के हाथ सब,

भारी है भरोसो तुलसी के एक नाम को॥

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

अति ही अयाने उपखानो नहि बूझैं लोग,

साह ही को गोतु गोतु होत है गुलाम को।

साधु कै असाधु, कै भलो कै पोच, सोचु कहा,

का काहू के द्वार परौं, जो हौं सो हौं राम को॥

तथा

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ ।

काहू की बेटी सो बेटा न ब्याहब, काहू की जाति बिगार न सोऊ॥

तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।

माँगि कै खैबौ, मसीत को सोइबो, लैबो को एकु न दैबे को दोऊ॥(उत्तरकाण्ड ०६)

विदित है कि संस्कृत को छोड़कर आम जन की भाषा में रामचरितमानस लिखने, भूख से व्यथित ब्रह्महत्या के भागी को भोजन कराने, काशी क्षेत्र में प्लेग फैलने के समय बिना जाति भेद एवं छुआछूत के सामान्यजन की सेवा सुश्रुषा करने एवं अखाड़ों की स्थापना तथा मस्जिद में फकीरों के साथ रहने के कारण तुलसीदास जी पर विविध प्रकार के आक्रमण हुए तथा उनकी जाति पर प्रश्न उठाने के साथ उन्हें कुलटा ब्राह्मणी की राजपूत संतान होने जैसी गालियां दी जाती रही। तुलसीदास जी ने इन आरोपण –विरोधों का जवाब अपनी रचनओंके माध्यम से देते हुए आदर्श सामाजिक व्यवस्था हेतु नैतिक आदर्श प्रस्तुत किए तथा धर्मनिरपेक्ष दृष्टि से प्रेमाभक्ति का झंडा बुलंद किया।

उपसंहार

भक्ति आन्दोलन का मूल आधार यदि देखा जाए तो भगवान् विष्णु एवं इनके विविध अवतारों की भक्ति से सम्बंधित था किन्तु यह पूर्णतः केवल धार्मिक आन्दोलन के रूप में नही देखा जा सकता बल्कि इसे तत्कालीन संकरामंकलिन सामाजिक व्यवस्था में फैली अराजकता, अंधविशवास, पाखण्ड

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के विरुद्ध सामाजिक सांस्कृतिक यथार्थ को चित्रित करते हुए उसके सुधर की दिशा में की जाने वाली क्रांति थी जो सांस्कृतिक नवजागरण के रूप में प्रकट हुआ। विभिन्न प्रकार के भेदभाव एवं शोषण के विरुद्ध, सामंतशाही एवं राजशाही के विरुद्ध यह बिगुल था। यह घोषणा थी कि ईश्वर के समक्ष सभी सामान है उसके जन्म जाति अथवा सम्प्रदाय से इतर। इस प्रकार इसने बहुसंख्यक आम जनमानस को प्रभावित एवं एकजुट किया। तुलसीदास जी ने अपने पदों के माध्यम से ना केवल दैवीय कही जाने वाली रचनाओं को आसान भाषा में आमजन तक पहुंचाने का कार्य किए बल्कि परम्परागत रूप से विद्यमान सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का यथास्थिति वर्णन करते हुए उनपे सवाल भी उठाया। तुलसीदास जी ने ज्ञान एवं गुरु की महत्ता को स्थापित करते हुए प्रेममय भक्ति को सर्वोच्च बताया। वर्तमान में तुलसीदास जी के जीवन दर्शन एवं उनकी रचनाओं को उचित सन्दर्भों के साथ समझने एवं आत्मसात करने की आवश्यकता है जिससे समाज में शांति, सौहार्द एवं भाईचारे का विकास सुनिश्चित हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

शुक्ल आचार्य रामचन्द्र : हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

शुक्ल आचार्य रामचन्द्रः गोस्वामी तुलसीदास, ना.प्र.स., वाराणसी।

द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद :हिंदी साहित्य (उसका उद्भव और विकास), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद: हिंदी साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

दीक्षित राजपति: तुलसीदास और उसका युग, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, बनारस ।

चतुर्वेदी परशुराम: वैष्णव धर्म, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी।

कविराज म.म. डॉ. गोपीनाथ : भारतीय साधना की धारा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।

वर्मा धीरेन्द्र (सं.) : हिंदी साहित्य कोश (भाग-*1)* ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी।

गुप्त माताप्रसाद : तुलसीदास, हिंदी परिषद्, प्रयोग विश्वविद्यालय ।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शर्मा रामविलासः परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। शर्मा रामविलास : हिंदी जाति का साहित्य, राजपाल एंड संस, दिल्ली।

तुलसीदास-काव्यकृतियां, ना.प्र.स., वाराणसी एवं गीताप्रेस, गोरखपुर।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल - चिंतामणी, इंडियन प्रेस इलाहाबाद

डॉ. शिवकुमार मिश्र - भक्ति काव्य और लोक जीवन, पीपल्स लिटरेरी प्रकाशन, दिल्ली ।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ; हिंदी साहित्य कोश (प्रथम भाग)

डॉ. गिरधर प्रसाद शर्मा मध्ययुगीन हिन्दी भक्ति काव्य का विवेचन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा; हिंदी साहित्य कोश, भाग *1* और *2.* ज्ञान मंडल प्रकाशन लिमिटेड, वाराणसी।

परशुराम चतुर्वेदी; - वैष्णव धर्म, चौखम्भा ओरियन्टालिया, वाराणसी।

कवितावली

दोहावली

रामचरितमानस

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies